सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएँ (Characteristics of Social Change):

सामाजिक परिवर्तन यद्यपि एक सर्वव्यापी नियम है लेकिन स्थिर और गतिशील समाजों में इसकी विशेषताएँ भिन्न-भिन्न देखने को मिलती है। स्थिर समाज में अनेक पीढ़ियों तक व्यक्तियों की स्थिति और भूमिका में अधिक परिवर्तन नहीं होता जबकि गतिशील समाजों में व्यक्तियों के पदों, मनोवृत्तियों, व्यवसायों, शिक्षा, सांस्कृतिक नियमों और व्यवहारों में सदैव परिवर्तन होता रहता है। इस जटिलता के बीच प्रस्तुत विवेचन में हम सामाजिक परिवर्तन की से सम्बन्धित कुछ सामान्य विशेषताओं का उल्लेख करेंगे :

① सामाजिक परिवर्तन की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती —

कोई भी व्यक्ति यह दावा नहीं कर सकता कि किसी भी समाज में एक निश्चित समय पर कौन-कौन से परिवर्तन होंगे ? हम अधिक-से-अधिक परिवर्तन की सम्भावना मात्र कर सकते हैं, अर्थात परिवर्तन की प्रवृत्ति (trend) का ही अनुमान लगा सकते हैं। उदाहरण के लिए हम अधिक-से-अधिक यही कह सकते हैं कि औद्योगीकरण के कारण अपराधों की मात्रा में वृद्धि होगी अथवा सामाजिक जीवन में रूढ़ियों व परम्पराओं का महत्व कम हो जायेगा, लेकिन किसी भी स्थिति में हम इनके विभिन्न स्वरूप की भविष्यवाणी नहीं कर सकते।

② सामाजिक परिवर्तन एक जटिल तथ्य है —

मैकाइवर का कथन है कि सामाजिक परिवर्तन का अधिक सम्बन्ध

Ajanta PRODUCTS Oxford

गुणात्मक परिवर्तनों (qualitative changes) से है और गुणात्मक तथ्यों की माप न हो सकने के कारण इनकी जटिलता भी बहुत अधिक बढ़ जाती है। भौतिक वस्तुओं में होने वाला परिवर्तन अपेक्षाकृत सरल होता है लेकिन सामाजिक संरचना तथा सामाजिक सम्बन्धों में होने वाला परिवर्तन इतना जटिल होता है कि उसका रूप सरलता से नहीं समझा जा सकता। सामाजिक परिवर्तन में जितनी अधिक वृद्धि होती जाती है, वह उतना ही जटिल और दूरस्थ (distant) होता जाता है।

(3) सामाजिक परिवर्तन की गति तुलनात्मक है- सभी समाजों में परिवर्तन का स्वरूप सदैव एक जैसा नहीं होता। एक ही समाज के विभिन्न भागों में परिवर्तन की गति विभिन्न-भिन्न हो सकती है। अथवा विभिन्न समूहों में होने वाले परिवर्तनों की प्रकृति एक-दूसरे से भिन्न हो सकती है। सामान्य रूप से सरल अथवा आदिवासी राज्यों में परिवर्तन बहुत कम और धीरे-धीरे होता है। जबकि जटिल अथवा औद्योगिक समाजों में सदैव नए परिवर्तन होते रहते हैं। यही कारण है कि गाँवों में परिवर्तन की गति धीमी और नगरों में बहुत तीव्र होती है।

(4) सामाजिक परिवर्तन अनिवार्य नियम है- सामाजिक परिवर्तन एक अनिवार्य घटना है। परिवर्तन चाहे नियोजित रूप से किया गया हो अथवा स्वयं हुआ हो, यह अनिवार्य रूप से सभी समाजों में देखने को मिलता है। विभिन्न समाजों में परिवर्तन में परिवर्तन की मात्रा में अन्तर हो सकता है। लेकिन इसके न होने की सम्भावना नहीं

की जा सकती ।

(5) सामाजिक परिवर्तन सर्वव्यापी है –

मानव समाज के इतिहास का आरम्भ आज से पच्चीस हजार वर्ष पूर्व सर्वनूतन काल (holocene) से माना जाता है। तब से लेकर आज तक समाज का रूप चाहे जैसा भी रहा हो, परिवर्तन की प्रक्रिया सभी व्यक्तियों, समूहों और समाजों को परिवर्तित करती रही है। इसका प्रभाव इतना सर्वव्यापी रहा है कि समाज में कोई भी दो व्यक्ति एक-समान नहीं हैं। उनके इतिहास और संस्कृति में इतनी भिन्नता पायी जाती है कि किसी को भी दूसरे का प्रतिरूप नहीं कहा जा सकता।

(6) परिवर्तन की प्रकृति गुणात्मक है –

किसी भी क्षेत्र अथवा पक्ष में उत्पन्न होने वाला परिवर्तन एकाकी नहीं होता बल्कि वह कम या अधिक सीमा तक सामाजिक जीवन के सभी दूसरे पक्षों को प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए, परिवहन और संचार के साधनों में वृद्धि होने से सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि हुई। इसने व्यक्तियों के विचारों, परिवार के संगठन और सम्बन्धों के स्वरूप को प्रभावित किया। इन परिवर्तनों से व्यक्ति की स्थिति और भूमिका नये स्वरूप ग्रहण करने लगी और फलस्वरूप सम्पूर्ण सामाजिक संरचना का रूप पहले से भिन्न हो गया। परिवर्तन की इस तीव्रता को देखते हुए भी ग्रीन (A. W. Green) ने कहा है कि " परिवर्तन उत्साहपूर्ण जीवन का प्रायः एक ढंग सा बन चुका है।"

प्रसिद्ध समाजशास्त्री मूर (W. E. Moore) ने आधुनिक समाजों में सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति को निम्नलिखित विशेषताओं

द्वारा स्पष्ट किया है।

(1) सामाजिक परिवर्तन एक अपवाद नहीं, बल्कि अनिवार्य नियम है। इसका तात्पर्य यही है कि किसी एक ही समय में सामाजिक ढांचे के सभी तत्व पूर्णतया बदल जाते हैं बल्कि इसका अर्थ है कि सामाजिक, ढाँचे के किसी न किसी अंग में सदैव परिवर्तन होता रहता है।

(2) पहले की अपेक्षा वर्तमान युग में होने वाले सामाजिक परिवर्तन कहीं अधिक स्पष्ट होते हैं क्योंकि इसका सम्बन्ध हमारे प्रत्यक्ष अनुभवों से होता है।

(3) यद्यपि परिवर्तन सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों में विद्यमान है लेकिन विचारों और संस्थाओं की अपेक्षा भौतिक वस्तुओं के क्षेत्र में इसकी गति कहीं अधिक तेज होती है।

(4) साधारण गति से होने वाला परिवर्तन हमारे विचारों और सामाजिक संरचना को अधिक प्रभावित करता है क्योंकि हममें से अधिकांश व्यक्ति सामान्य जीवन से एकाएक अलग हो जाने के पक्ष में नहीं होते।

(5) सामाजिक परिवर्तन एक अनुमानित तथ्य है, निश्चित तथ्य नहीं।

(6) सामाजिक परिवर्तन गुणात्मक होता है। इसका तात्पर्य है कि एक स्थिति दूसरी दशा को परिवर्तित करती है और यह क्रम तब तक चलता रहता है जब तक इसके अच्छे या बुरे प्रभावों से सम्पूर्ण समाज परिचित नहीं हो जाता।

(7) आधुनिक समाजों में सामाजिक परिवर्तन पूर्णतया स्वतन्त्र और व्यवस्थित रूप से नहीं होता। साधारणतया प्रत्येक समाज में 'सामाजिक नियोजन' के द्वारा इसे एक विशेष दिशा देने का प्रयत्न किया जाता है।